P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-2* May- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

संस्कार ही आदर्श समाज की आधार शिला

प्रमिला टण्डन
पूर्व प्राचार्या एंव विभागाध्यक्षा,
हिंदी विभाग,
राजर्षि टण्डन महिला
महाविद्यालय,
मालवीयनगर, इलाहाबाद

सारांश

संस्कार प्रगतिशील समाज के निर्माण की वह आधारशिला है जो मानव को सुसंस्कारी व सामाजिक बनाती है। एक आदर्श समाज के निर्माण में संस्कार की इतनी आवश्यकता है कि कबीर जैसे कवि आज भी प्रासंगिक हैं। इस संस्कार के निर्माण में पारिवारिक वातावरण व स्कूल परिसर दोनों ही मुख्य भूमिका निभाते हैं।

मुख्य शब्द : संस्कार से तात्पर्य, जातिगत वैमनस्य, मानवीय मूल्य, आत्मचिंतन, आत्मबोध, मानवता, नैतिक आदर्श आदि।

प्रस्तावना

संस्कार से तात्पर्य आत्मशोधन, आत्मबोध, सुधार, साफ करना, दुरूस्त या ठीक करना इत्यादि है। जहां ज्ञान व प्रेम मिल जाते हैं, वहां बोध प्रकट होता है। किन्तु समाज में प्रायः सभी इससे वंचित रह जाते हैं। व्यक्ति से ही समाज बनता है यदि व्यक्ति में सुधार की भावना है तो समझिए समाज सुधर गया एक–एक बूंद से घड़ा भरता है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. संस्कार क्या है? से पाठकों को अवगत कराना।
2. कबीर के काव्य में संस्कार का महत्व।
3. संस्कार के निर्माण में समाज का योगदान।
4. संस्कृति और संस्कार का महत्व।

शोध प्रविधि

प्रस्तावित शोधपत्र की अध्ययन विधि मुख्य रूप से व्याख्यात्मक व विवेचनात्मक है। यह साहित्यिक पुस्तकों, शोध पत्रों, व समाचार पत्रों से प्राप्त सूचनाओं का आधार लेकर तैयार किया गया है।

साहित्यावलोकन

समाज में गिरते मूल्यों, जातिगत वैमनस्य, भाई चारे के अभाव को दूर करने के लिये कबीर की वाणी आज भी प्रासंगिक है और कबीर के विचारों को पुर्नजागृत कर भारतीय समाज को एक नई दिशा प्रदान की जा सकती है, आज भ्रष्टाचार सर्वत्र व्याप्त है। हमें मानवता की रक्षा के लिये अपने चरित्र और संस्कार को सुसंस्कृत करना होगा। जिसके लिये 'प्रेम' ही सबसे बड़ा आधार है–

''ढाई आखर प्रेम को पढ़े सो पण्डित होय''

कबीर के इस प्रेम चेतना से पूरा संसार प्रभावित हुआ। रिश्तों की सिलाई अगर भावनाओं से हुई है तो टूटना मुश्किल है, अगर वहीं स्वार्थ से हुई है तो टिकना मुश्किल है। जहां बोध होता है वहीं मानव चेतना का शिखर होता है, वहीं बुद्ध, महावीर, विवेकानन्द का जन्म होता है जो व्यक्ति नहीं संस्था थे। संस्कारों को समाज से समायोजित करने के लिये आत्मशोधन एवं लोकमंगल के क्रियाकलापों को जीवनचर्या का अंग बना लेने मात्र से व्यक्तित्व में बुद्धि, विवेक का समावेश हो जाता है और इस भूमण्डलीकरण के इस युग में व्यक्ति चन्द्रमा और मंगलग्रह में निवास करने की तैयारी कर रहा है, दूसरी ओर दुःखद स्थिति पृथ्वी पर अमंगल ही अमंगल हो रहे है, व्यक्ति, व्यक्ति का दुश्मन बन रहा है। मानवीय मूल्यों के क्रम में विश्वशान्ति और विश्व–बन्धुत्व की उदान्त भावना से ओतप्रोत वैदिक मंत्रों में परस्पर सौहार्द, मैत्री की भावना की उपलब्धि नितान्त ही स्वाभाविक है–

''मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चुक्षुषा समीक्षामहे।''

संस्कार के निर्माण में समाज की भूमिका

'पृथ्वी' धैर्य रूपी संस्कार का प्रतीक है, स्तंभ है जो हमें जीवन जीने की सीख देती है। प्रकृति न जाने कितने अनगिनत रूपों से मानवता का सन्देश और रिश्तों की मजबूती सिखा रही है। वृक्ष हमें सिखाता है झुकना। किसी के सामने झुकना बुजदिली नहीं, यह हुनर है रिश्ता निभाने का।

''वृक्ष कबहूं न फल भखै, नदी न संचय नीर।
परमारथ के कारणे साधु धरा शरीर।

छोटे पौधे ही विशाल वृक्ष बनते हैं। एक कुशल माली पौधे की सही ढंग से काट–छांट करके खाद, पानी देकर, पशुओं से उसकी रक्षा करता है। इसी तरह माता–पिता को अपनी संतानो के प्रति सजग होकर उनकी देखरेख, बुरी संगत से दूर कर एक परिवार एवं समाज के लिये सफल नागरिक बनाना चाहिए। प्राचीन काल में वैवाहिक जीवन एवं ग्रहस्थाश्रम केवल इच्छा पूर्ति के लिये नहीं अपितु आत्मविकास की प्राप्ति एवं उत्तम संतान के लिये होता था। जीवन की सार्थकता त्याग, सेवा संयम में थी, इसलिये प्राचीन काल में वीरत्व एवं संतकोटि के महापुरूष जन्म लेते थे। एक बार राष्ट्रीय महात्मा गांधी से एक पत्रकार ने पूछा 'आप इतने महान आत्मा है लेकिन आपकी संतान इतनी सामान्य क्यों है।'' इस पर महात्मा गांधी ने कहा है ''मेरी संतानों के समय में अत्यन्त सामान्य था''। इससे स्पष्ट होता है कि गर्भ के समय माता–पिता के संस्कार, उनकी मनः स्थिति, परिस्थिति का पूरा प्रभाव संतान पर पड़ता है। आज वैश्वीकरण के युग में बच्चे को माता–पिता से प्यार, मानवता का संदेश, उच्च जीवन जीने की कसौटी, आदर्श जीवन के उद्देश्य नहीं मिल पा रहे हैं। लोभ एवं स्वार्थ में मानवता अपने को पहचान नहीं रहा है। अपने आदर्श व मूल्यों को खोता चला जा रहा है यही कारण है कि हम संस्कारों से दूर होते जा रहे हैं। माता–पिता अपने बच्चों से उनकी समस्याओं को साझा नहीं कर पा रहे हैं। आज का बालक व युवा मानसिक विकृति से जूझ रहा है। हम आपके है कौन नहीं जान पा रहा है, हम आपके हैं कितने नहीं समझ पा रहे हैं। आत्मविश्वास, आत्म चिंतन खो रहा है।

आत्मनिर्माण और संस्कार

मन की शक्तियां बड़ी अद्भुत है। जिसने मन को जीत लिया उसने संसार को जीत लिया। प्रगति का एक सुन्दर स्वरूप है। आत्मनिर्माण यह तभी संभव है जब आत्मा में श्रद्धा की भावना रहेगी। व्यक्ति वास्तव में समूह का एक अलग न होने वाला एक मात्र घटक है, उसकी सत्ता का समुचित विकास तभी हो सकता है। जब वह समाजनिष्ठ होकर रहे, जैसे मछली को अथाह जल से भरे सागर में सुकून और शान्ति मिलती है, उससे दूर होकर वह विचलित होने लगती है यही मनुष्य की समाजिकता है, जीवन जीने की कला है। मनुष्य के लिये इस समाज में डरने और लड़ने के लिये कोई सत्ता नहीं है, बल्कि यह मानसिक विकृतियां हैं, जैसे कुएं के पानी में झांकता हुआ शेर अपने ही प्रतिबिम्ब को दूसरा मानकर गरजने लगता है फिर कुएं में छलांग मारकर अपने प्राण गवा देता है। वास्तव में ये शेर का अपना आपा ही शत्रु बनकर सामने खड़ा हो जाता है, यह है अहंकार, जो संस्कारहीन समाज को जन्म दे रहा है। अहंकार की कुंडी तोड़नी होगी। तभी मनुष्य अपनी सत्ता के स्वरूप एवं सृजन को समझ सकेगा। 'आत्मबोध' की किरणें अहंकार के अंधकार को दूर कर देगी। मनुष्य में आत्मज्ञान जाग जायेगा। उदारता संस्कार का एक सुन्दर स्वरूप है। परिवार चाहे संयुक्त हो, चाहे एकल, पर स्नेह सद्भाव तो उसके प्राण हैं। सद्भाव से रहित परिवार में घुटन और निराशा का वातावरण बन जाता है।

संस्कार ही संस्कृति की पहचान है,
मानवता ही मानव का आभूषण है।
संस्कृति से श्रृंगार करो,
मानवता का उद्धार करो।।

संस्कृति और संस्कार

संस्कृति हीं संस्कार का आधार है। विश्व की समस्त संस्कृतियों में सबसे प्राचीन संस्कृति भारतीय संस्कृति है। इसका मूल स्रोत वेद को माना जाता है। भारतीय परम्परा के मूल स्रोत में संस्कार हैं। जिसके लिये वर्ण व्यवस्था एवं आश्रम व्यवस्था सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। संस्कार क्या है? मनु कहते हैं कि वेद शास्त्रों के स्वाध्याय से व्रतविधान से होम से वेदों के सम्यक ज्ञान से एवं स्वपत्नी में सन्तानोत्पत्ति से, देव, ऋषि एवं पितरों के तर्पण, नित्य देवपूजन ब्रह्म आदि पग्च महायज्ञों के तथा जयोतिष्टोम आदि द्विजातियों का शरीर ब्रह्म पारित के योग्य होता है। भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों के उद्भावक ऋषियों ने मानव कल्याण के लिये अध्याय का आश्रय ग्रहण करना जरूरी समझा जिससे मानवीय मूल्यों एवं संस्कारों द्वारा मानवता का विकास हो सके।

धर्म के लक्षण का आगणन करते हुए मनु ने इस प्रकार कहा है–

घृतिः क्षमा दयोडस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः
धी र्विघा सत्यमक्रोघो दशकं धर्म लक्ष्बाम्।

इन सूत्र वाक्यों द्वारा मानवीय मूल्यों का समादर इस प्रकार किया जा सकता है–

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्मा अमृतं गमय।।

नैतिक आदर्श और संस्कार

नैतिक आदर्शों की ऐसी पृष्ठभूमि हमारे संस्कृत साहित्य में दे–पर्दे समाहित है जिसका अनुपालन करने पर मनुष्य सच्चे अर्थ में मानवता का पुजारी बन सकता है। महाकवि गोस्वामी तुलसीदास की ये पक्तियां अत्यन्त सार्थक कहीं हैं–

परहित सरिस धर्म नहीं भाई।
परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।

मानवीय मूल्यों का आजकल सर्वथा तीव्रगति से क्षरण हो रहा है। इसका मुख्य कारण यही है कि आज की पीढ़ी अपने प्राचीन संस्कारों एवं संस्कृति से संपूर्णतया अनभिज्ञ है। वैज्ञानिक युग के प्रभाववश समाज संस्कार विहीन होकर मर्यादा का अतिक्रमण कर रहे हैं जो परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप से हमारी नैतिकता को क्षति पहुंचा रहे हैं। सद्भाव तथा सौहार्द का लोप होना मानवीय मूल्यों के लिये हानिकर है। संस्कारों के अभाव में मनुष्य–मनुष्य कहलाने का अधिकारी ही नहीं है–

येषं न विद्या न तपो न दानं
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूतः
मनुष्य रूपेण मृगाश्चरिन्त।

कबीर ने संस्करों पर जोर दिया है–

1. आत्म संस्कार
2. समाज संस्कार

काम, क्रोध, लोभ और मद को जीतना आत्मसंस्कार है, तभी तो उन्होंने लिखा– ''मन न रंगाये, रंगाये जोगी कपड़ा'' कबीर ने समाज संस्कार के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों– बलिप्रथा, जातिप्रथा, मूर्तिपूजा, कर्मकाण्ड आदि का विरोध इस वाक्य से किया– 'पांडे निपुण कसाई'

कबीर का मानना था कि आदर्श समाज की रचना के लिये आदर्श नागरिक का होना आवश्यक है। आज संस्कारों के अभाव में समाज और परिवार का तानाबाना बिखरता जा रहा है। अत्यन्त समीप सामाजिक सम्बन्ध वाला पड़ोस दूर होता जा रहा है, बगल वाले घर में कौन रह रहा है, वह क्या करता और क्यों कर रहा है, इससे उसे कोई मतलब नहीं है। ऐसी सामाजिक परिस्थिति में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सामाजिक नियन्त्रण का लोप हो जाता है। समाज में स्थापित मूल्यों–त्याग, परिश्रम, ईमानदारी, सत्यता अहिंसा आदि को ताक पर रखकर जीवन में आगे बढ़ने की जिजीविषा उन्हें गलत रास्ते पर ले जाती है।

निष्कर्ष

धनाड्य परिवारों के अभिभावकों के पास बच्चों के लिये समय ही नहीं है। बच्चों के पास इतना पैसा होता है कि, उनको पता ही नहीं कैसे खर्च किया जाए। इसीलिये वे अवांछित आदतों के शिकार हो जाते हैं। परिवार के स्थान पर किसी वैकल्पिक संस्था के अभाव में आज का समाज अकेले ही अपनी नैतिकता की लड़ाई लड़ता है जो अपराध रोकने के लिये पर्याप्त नहीं है। वास्तव में समाज में फैले हुए अपराधों को समाप्त करने के लिये योग में एक शब्द प्रयोग होता है–संस्कार संस्कार ही है, जो हमारे व्यवहार को प्रभावित करता है हमारी रूचियों को प्रेरित करता है। संस्कार रूचियों का व्यवहार का प्रेरक है। वह व्यक्ति की कल्पनाओं, विचारों एवं भावनाओं में रंग भरता है, उन्हें एक स्वरूप प्रदान करता है। संस्कार वह गहरा भाव एवं उससे जुड़ा वह कार्य है, जिसकी अमिट छाप न केवल व्यवहार और विचार में, बल्कि चित्र की गहराई में अंकित हो जाती है। संस्कारों के कर्म आसानी से न तो मिलते हैं और न ही बदलते हैं। भारतीय मनोविज्ञान की आधार यही संस्कार हैं। इसको समझ लेने पर जीवन का अतीत, वर्तमान और भविष्य सभी अपने हाथों में आ जाते हैं।

पारिवारिक वातावरण और स्कूल परिसर की सार्थकता प्रतिष्ठा तब ही है, जबकि अनगढ़ स्तर के समुदाय को सुसंस्कारी बनाने में इस स्तर तक सफल हो सकें कि उनके माध्यम से प्रतिभाओं का निर्माण हो। इस प्रयास में इतना और जुड़ना चाहिए कि परिष्कृत व्यक्तियों का निर्माण सर्वोपरि है। इतिहास में जिन्होंने भी कुछ अविस्मरणीय काम किये हैं। उन सभी में प्रतिभा विद्यमान थी और जिनमें सज्जनता का समुचित समावेश रहा, उन्होंने अपनी शक्तियों का एक क्षण भी बरबाद नहीं किया और अपने विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति में समग्र तन्मयता और तत्परता के साथ जुटे रहे। जिन विद्यालयों के छात्र न केवल बुद्धिमान, वरन् चरित्रनिष्ठ एवं समाज निष्ठ बनकर निकलें तो समझना चाहिए कि शिक्षा को सार्थक करने वाली विशिष्टता बन पड़ी।

सही रूप उतरेगा उस दिन। मानव के उत्थान का।
जिस दिन होगा मिलन विश्व में धर्म और विज्ञान का।।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अखण्ड ज्योति–अंक–06 जून–2017*
2. *युग निर्माण योजना–अंक–02–अगस्त–2017*
3. *वेदांग–वीथी शोध–पत्रिका–405–अंक–2*
4. *शिक्षा एवं उदीयमान भारतीय समाज–लेखिका डा. निर्मल सक्सेना*
5. *हिन्दी अनुशीलन–जून–2017, भारतीय हिन्दी–परिषद प्रयाग।*